सीबीएसई कक्षा - 12 हिन्दी (केन्द्रिक) सेट-2
2014 (बाहरी दिल्ली)

निर्देश:

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 8 हैं।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-'क'

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (5)

तोड़ दो मन ! अहम् तोड़ दो।

मत शिखर पर अकेले रहो,

मुक्त मैदान में भी बहो,

अंध क्षण में भी ली हो अगर-

दंभ की हर कसम तोड़ दो !

ज़िन्दगी बँध गई झील-सी,

एक बीमार कन्दील-सी,

आदमी के हितों के लिए-

निर्दयी सब नियम तोड़ दो !

श्रेष्ठतम सृष्टि की सर्जना, -

व्यर्थ उस प्यार की वर्जना,

स्वस्थ संशोधनों के लिए-

रूढ़ियों की रसम तोड़ दो !

स्वप्न वह जो कि पैदल चले,

धूल जलती हुई मुख मले,

सिर्फ़ रेशम नहीं ज़िन्दगी-

इन्द्रधनुषी वहम तोड़ दो !

(क) कवि 'अहम्' को तोड़ने के लिए क्यों कह रहा है?

(ख) कवि की दृष्टि में नियमों की निर्दयता का क्या कारण है?

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए:

'स्वस्थ संशोधनों के लिए-

रूढ़ियों की रसम तोड़ दो'

(घ) कवि ने कैसे स्वप्नों और धूल को श्रेष्ठ माना है और क्यों?

(ङ) कविता में 'इन्द्रधनुषी' वहम किन्हें कहा गया है और क्यों?

उत्तर- (क) ● अहम्, मनुष्य में निराधार श्रेष्ठता की भावना एवं अलगाव पैदा करता है।

● मानव हित एवं स्वस्थ सुंदर समाज में समता, समानता के लिए अहम् के परित्याग की अपेक्षा।

(ख) ● बँधी हुई जिन्दगी एवं बीमार सोच के कारण।

● सामाजिक व्यवस्था को कठोरता से लागू करने के कारण।

(किसी एक बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)

(ग) ● मानवता के कल्याण एवं समाज के स्वस्थ विकास के लिए बाधक बन रही प्राचीन रूढ़ियों एवं पुरानी सोच को तोड़ देना ही उचित है।

(घ) ● स्वप्न - जो यथार्थ बन सके।

● धूल - जो मनुष्य के श्रम से उत्पन्न हो। संसार में इन्हीं से सफलता मिलती है।

(ङ) ● जीवन के कठोर यथार्थ की उपेक्षा।

● जिन्दगी को केवल क्षणिक सुख के आभास से जोड़ कर प्रसन्न होना।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

स्वर्ण विनष्ट हो जाता है और जन्म देता है स्वर्ण-भस्म को, जिसका महत्व स्वर्ण से अधिक होता है। यही बात निराला जी के विषय में भी कही जा सकती है जो स्वयं मिटकर भी हिन्दी साहित्य को शिखर तक ले जाने के लिए प्रयत्नशील रहे। जीवनकाल में उन्हें समुचित यश न प्राप्त हो सका, यद्यपि वह उसके लिए कभी लालायित नहीं रहे। पग-पग पर उन्हें संघर्षों का सामना करना पड़ा, किन्तु अनवरत संघर्ष भी उनकी काव्य-गति को अवरुद्ध न कर सका। काव्य-मंदाकिनी अंत समय तक अग्रसर होती रही, मंद भले ही हो गई हो, रुकी नहीं।

साहित्यिक क्षेत्र के अतिरिक्त जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी उन्हें कम संघर्षों से नहीं जूझना पड़ा। प्रकाशक की तथाकथित उदारता, मित्रों के व्यवहार एवं उनकी मुक्तहस्तता ने कभी भी उनके पास द्रव्य को स्थान न पाने दिया। अर्थाभाव के कारण वे पत्नी और संतान के प्रति भी अपना कर्तव्य पूरा न कर सके। संतान के सुख के लिए उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को दुखमय बना डाला। दूसरा विवाह-बन्धन स्वीकार नहीं किया। बिरले ही पिता अपनी संतान के लिए ऐसा त्याग कर पाते हैं। निराला जी जहाँ साहित्य में पुरानी रूढ़ियों और बंधनों को न मानकर, नव गति, नव लय, ताल, छन्द पर ज़ोर देते रहे, वहीं समाज के भ्रामक ढकोसले उनके क्रान्तिकारी मन को न भाए, उन्होंने उनको भी अस्वीकार कर दिया। निराला महान् थे। इस प्रकार के व्यक्ति किसी स्थान, जाति अथवा सम्प्रदाय-विशेष के नहीं हुआ करते, वह विश्व की विभूति हुआ करते हैं।

(क) 'निराला' कौन थे? उनकी तुलना स्वर्ण-भस्म से क्यों की गई है? (2)

(ख) काव्य-मंदाकिनी से क्या तात्पर्य है? वह मंद क्यों पड़ गई? (2)

(ग) 'निराला' के जीवन में धनाभाव के क्या कारण थे? इससे उनके पारिवारिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा? (2)

(घ) संतान के हित के लिए उनका 'विरला' त्याग क्या था? (1)

(ङ) साहित्यिक क्षेत्र में निराला किन बातों पर बल देते रहे? (2)

(च) कैसे कहा जा सकता है कि निराला महान् थे? (2)

(छ) लेखक ने उन्हें विश्व की विभूति क्यों कहा हैं? (1)

(ज) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

(झ) उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए: (1)

समुचित, महत्व

(ञ) 'संतान के सुख के लिए उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को दुखमय बना डाला।' - मिश्र वाक्य में बदलिए। (1)

उत्तर- (क) महान कवि, साहित्यकार, जो स्वयं मिटकर भी हिन्दी साहित्य के विकास के माध्यम से समाज के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहे।

(ख) ● कविताओं की सतत रचना।

● जीवन में लगातार आनेवाली बाधाओं एवं संघर्षों के कारण।

(ग) ● निराला की उदारता, दानशीलता एवं मित्रों के विश्वासघात आदि कारण।

● पत्नी और संतान के प्रति अपना कर्तव्य पूरा न कर सके।

(घ) -दूसरा विवाह बंधन स्वीकार न करना।

(ङ) ● रूढ़ियों और बंधनों का विरोध, प्रगतिशील विचार।

● नव गति, नव लय, नव ताल एवं नए छंद (मुक्त छंद) पर ज़ोर।

(च) ● संघर्षशील जीवन।

● उच्चतम आदर्शों के अनुरूप वैयक्तिक जीवन।

● नए साहित्य का सृजन।

● प्रगतिशील विचार से सामाजिक ढकोसलों का विरोध।

(किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)

(छ) किसी स्थान, जाति अथवा सम्प्रदाय, देश काल की सीमाओं से ऊपर उठकर सबके लिए सोचने के कारण।

(ज) -शीर्षक-

● कवि निराला।

● विश्व की विभूति - निराला।

(अन्य कोई उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकारें।)

(झ) सम् + उचित

महत् + त्व

(ञ) वे ऐसे थे, जिन्होंने संतान के सुख के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को दुखमय बना डाला।

खण्ड-'ख'

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए: (5)

(क) बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण

(ख) पैसा 'पावर' है

(ग) गुमराह करते विज्ञापन

(घ) पर्यावरण और हम

उत्तर- किसी एक विषय पर निबंध अपेक्षित:

● भूमिका/प्रस्तावना 1

● विषय-वस्तु 3

● भाषा की शुद्धता एवं प्रस्तुति 1

4. नई दिल्ली में स्थित उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के सचिव को पत्र लिखकर बाज़ार में नक़ली सामान की बढ़ती पर चिंता व्यक्त करते हुए उसकी बिक्री पर प्रतिबंध लगाने पर अनुरोध कीजिए। (5)

अथवा

नगर की सड़कों पर मोटर साइकिल को तीव्र गति से चलाने वाले और उन पर करतब दिखाकर खिलवाड़ करने वाले युवकों के विरुद्ध कार्यवाही की माँग करते हुए नगर के पुलिस-अधीक्षक को पत्र लिखिए।

उत्तर- पत्र-लेखन:

● आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ [1]

● प्रभावी विषय-वस्तु [3]

● भाषा की शुद्धता, प्रवाह एवं लेख [1]

5. (क) निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए: (5)

(i) मुद्रित माध्यमों की दो विशेषताएँ लिखिए।

(ii) रेडियो-समाचार की संरचना-शैली क्या है?

(iii) 'ड्राई एंकर' किसे कहते हैं?

(iv) इंटरनेट-पत्रकारिता की लोकप्रियता के दो कारण लिखिए।

(v) फ्रीलांसर पत्रकार किसे कहा जाता है?

(ख) 'समाज में अन्धविश्वासों का फैलता जाल' अथवा 'युवकों में नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति' विषय पर एक आलेख लिखिए। 5

उत्तर- (क) (i) ● छपे शब्दों में स्थायित्व।

● कहीं से भी पढ़ सकते हैं।

● सुरक्षित रख सकते हैं।

● चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम।

(किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)

(ii) -उल्टा पिरामिड शैली।

(iii) इसमें एंकर समाचार को संवाददाता से मिली जानकारियों के आधार पर सीधे-सीधे दर्शकों तक पहुँचाता है, जब तक समाचार के दृश्य उपलब्ध नहीं हो जाते।

(iv) ● अंतःक्रियात्मक माध्यम होना।

● तेजी से खबरों का संकलन, संपादन एवं प्रेषण।

● अपडेशन की सुविधा।

● श्रव्य, दृश्य एवं प्रिंट की विशेषताएँ समाहित।

(किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)

(v) फ्रीलांसर (स्वतंत्र पत्रकार) - जो भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार संस्थाओं के लिए काम करे/लिखे।

(ख) किसी एक पर आलेख लेखन-

प्रभावी विषय - वस्तु [2]

प्रस्तुति [2]

भाषा की शुद्धता [1]

6. 'पतनशील राजनीति' अथवा 'महँगी होती स्वास्थ्य सेवाएँ' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए। (5)

उत्तर- किसी एक पर फीचर लेखन-

प्रभावी विषय - वस्तु [2]

प्रस्तुति [2]

भाषा की शुद्धता [1]

खण्ड-'ग'

7. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (8)

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था

ज़ोर ज़बरदस्ती से

बात की चूड़ी मर गई

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी।

हारकर मैंने उसे कोल की तरह

उसी जगह ठोक दिया

ऊपर से ठीक-ठाक

पर अंदर से

न तो उसमें कसाव था

न ताकत !

बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह

मुझसे खेल रही थी,

मुझे पसीना पोंछते देखकर पूछा-

"क्या तुमने भाषा को सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा?"

(क) बात की चूड़ी मर जाने का क्या अर्थ है? चूड़ी मर जाने का क्या परिणाम हुआ?

(ख) बात के कसाव और ताकत से कवि को क्या अभिप्रेत है? बात की ये दोनों विशेषताएँ कैसे प्रभावहीन हो गई?

(ग) कवि ने बात को शरारती बच्चा क्यों कहा है? वह बच्चा कवि के साथ कैसा व्यवहार कर रहा है और क्यों?

(घ) 'भाषा को सहूलियत से बरतने' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क) ● अनावश्यक शब्द-जाल से बात का प्रभाव समाप्त हो जाना।

● बात का बेअसर हो जाना।

(ख) ● कथ्य के अनुरूप सही शब्दों का चुनाव एवं प्रभावी अभिव्यक्ति क्षमता।

● भाषा को लापरवाही से बरतने से।

(ग) ● बात कवि की असमर्थता का उपहास उड़ाती है जो उचित अभिव्यक्ति न दे सका।

● कवि को चिढ़ाकर सही भाषा प्रयोग का अवसर देना।

● बच्चा कवि की आत्मानुभूति, जो भाषा के सटीक एवं प्रभावशाली प्रयोग के लिए उकसाती है।

(घ) ● भाषा का प्रयोग सहजता और सरलता के साथ करना।

● क्योंकि कवि का सही अनुभव सही ढंग से सम्प्रेषित हो।

अथवा

ज़िन्दगी में जो कुछ है, जो भी है

सहर्ष स्वीकारा है;

इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है

वह तुम्हें प्यारा है।

गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब

यह विचार-वैभव सब

दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब

मौलिक है, मौलिक है

इसलिए कि पल-पल में

जो कुछ भी जाग्रत है, अपलक है –

संवेदन तुम्हारा है ! !

(क) ‘सहर्ष स्वीकारा है’ के रूप में कवि ने किन भावों को ख़ुशी-ख़ुशी अंगीकार किया है और क्यों?

(ख) ‘तुम्हें’ के रूप में कवि का संबोध्य कौन है? आप ऐसा क्यों मानते हैं?

(ग) टिप्पणी कीजिए:

(i) गरबीली ग़रीबी

(ii) भीतर की सरिता

(घ) ‘संवेदन तुम्हारा है’ – ‘संवेदन’ से कवि का क्या अभिप्राय है? इस संवेदन के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क) ● जीवन के सुख-दुख, उतार-चढ़ाव, व्यक्तित्व की दृढ़ता एवं मीठे-तीखे अनुभव आदि भावों को,

● क्योंकि वह इन सबके साथ अपने प्रिय को जुड़ा पाता है।

(ख) ● प्रिया

● वृहत्तर जीवन दर्शन

● प्रकृति

● परमात्मा

(किसी एक का भी उल्लेख करने वाले तर्क संगत उत्तर स्वीकार्य)

(ग) ● स्वाभिमानी कवि को गरीबी पर भी अभिमान।

● सदैव प्रवाहित होने वाला भाव जगत जो सरिता के समान तरल है।

(घ) -अनुभूति। संवेदन में सहज प्रेम की ऊष्मा, प्रेरणा शामिल।

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (6)

ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,

पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।

तुलसी बुझाई एक राम घनस्याम ही तें,

आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।

(क) 'राम घनस्याम' का अलंकार-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

(ख) काव्यांश के भाषिक सौन्दर्य पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) काव्यांश के आधार पर तुलसीयुगीन सामाजिक यथार्थ पर विचार कीजिए।

उत्तर- (क) -रूपक अलंकार।

(ख) ● ब्रज भाषा

● अलंकार - रूपक, अनुप्रास

● कवित्त छंद

● प्रसाद गुण

(ग) ● सामाजिक स्तर-भेद

● आर्थिक विषमता

● भेदभाव मूलक सामाजिक वातावरण

● वैयक्तिक एवं सामाजिक नैतिकता का ह्रास

● स्वार्थी प्रवृत्ति का विकास

● धर्म के भीतर ह्रास।

(किन्हीं दो का उल्लेख अपेक्षित)

अथवा

रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली

छायी है घटा गगन को हलकी-हलकी

बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे

भाई के है बाँधती चमकती राखी।

(क) काव्यांश के छन्द पर टिप्पणी कीजिए।

(ख) कविता के भाषिक वैशिष्ट्य को स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'रस की पुतली' के भावगत सौन्दर्य को उद्घाटित कीजिए।

उत्तर- (क) रुबाई - उर्दू और फारसी का छंद, चार पंक्तियाँ, पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है, तीसरी पंक्ति स्वतंत्र।

(ख) ● बोलचाल की सरल भाषा।

● 'गगन', जैसे तत्सम शब्द का प्रयोग।

● 'राखी के लच्छे' के लिए 'बिजली की चमक' उपमान के प्रयोग द्वारा रिश्तों की पवित्रता के सत्य का उद्घाटन।

● 'हल्की-हल्की' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।

(ग) ● भाई-बहन के प्रेम की अभिव्यक्ति करने वाले रक्षाबंधन की सुबह को 'रस की पुतली' कहा।

● आत्मीय बंधन और उसमें व्याप्त सरस भावों को मूर्तिमान करने वाला प्रयोग।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (6)

(क) कैसे यह कहा जा सकता है कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह के जीवन्त परिवेश का एक सफल चित्र है।

(ख) बादल राग' कविता में किसान-मज़दूर की आकांक्षाएँ बादल को नव-निर्माण के राग के रूप में पुकार रही हैं - उदाहरणों के आधार पर प्रस्तुत कथन की पुष्टि कीजिए।

(ग) 'आत्म-परिचय' कविता दुनिया के साथ कवि के प्रीतिकलहपरक सम्बन्धों का परिचय कराने वाली कविता है - सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क) -गाँव की सुबह का जीवन्त चित्र-

● राख से लीपा हुआ चौका।

● केसर से धुली काली सिल।

● स्लेट पर लाल ख़डिया चाक मलना।

● नील जल में किसी की गौर-झिलमिल देह।

(ख) ● बादल का आह्वान क्रांति के रूप में।

● बादल रूपी युद्ध नौका के साथ जुड़ी दुखी जनों की आकांक्षाएँ।

● बादल गर्ज ना से शोषितों की आकांक्षाओं के सुप्त अंकुरों का उगना।

(ग) ● सांसारिक जीवन में रहकर भी अलग व्यक्तित्व।

● जग का गान नहीं गाता, अपने मन का गीत गाता।

● पृथ्वी के वैभव और महलों को ठुकराता है, खण्डरों को अपनाता है।

10. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (8)

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।
सियारों का क्रन्दन और पेचक की डरावनी आवाज़ कभी-कभी निस्तब्धता को भंग अवश्य कर देती थी। गाँव की झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज़, 'हरे राम ! हे भगवान !' की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी।
(क) अँधेरी रात किस रूप में आँसू बहा रही थी और क्यों?
(ख) करुण सिसकियाँ और आहें किनकी थीं? ऐसा क्यों कहा गया है कि निस्तब्धता उन्हें हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी?
(ग) किसी तारे को 'भावुक' क्यों कहा है? वह धरती पर क्यों आना चाहता होगा?
(घ) लेखक ने सियार और पेचक की आवाज़ को 'क्रन्दन और डरावनी' क्यों कहा है?

उत्तर- (क) ● शांत भाव से।

● मलेरिया और हैजे से पी़डितों के कष्ट सहन करने के कारण।

(ख) ● मलेरिया और हैजे से पी़डितों की।

● करुण सिसकियों और आहों को सुननेवाला कोई न था।

(ग) ● रोगियों की पीड़ा का प्रभाव तारों पर भी, टूट कर धरती की ओर।

● पीड़ितों की सहायता करने।

(घ) ● सियार की आवाज़ रुदन जैसी।

● निस्तब्धता में पेचक की आवाज़ डर पैदा करने वाली।

अथवा

भक्तिन और मेरे बीच सेवक-स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है; क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता, जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया, जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है, जितना अपने घर में बारी-बारी से आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना। वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते हैं, जिसे सार्थकता देने के लिए ही हमें सुख-दुख देते हैं, उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए ही मेरे जीवन को घेरे हुए है।

(क) लेखिका को अपने-आपको भक्तिन का स्वामी मानने में क्या कठिनाई है?

(ख) भक्तिन के लिए स्वामी के आदेश पर अवज्ञा से हँसने की बात लेखिका ने क्यों कही है?

(ग) भक्तिन को नौकर कहने की असंगति को कैसे समझाया गया है?

(घ) भक्तिन के व्यक्तित्व की सार्थकता किस पर आधारित है और क्यों?

उत्तर- (क) ● स्वामी के अधिकारों का निर्वाह न कर सकना।

● निष्ठावान भक्तिन द्वारा स्वामी की अवज्ञा।

(ख) ● भक्तिन की कर्तव्यनिष्ठा।

● सेवक-स्वामी से भी गहरा संबंध।

(ग) ● नौकर होने के बावजूद स्वच्छंद होकर कार्य करना।

● लेखिका के जीवन का अभिन्न अंग होना।

(घ) ● भक्तिन अपनी प्रकृति से ही कर्तव्यनिष्ठ।

● भक्तिन का जीवन लेखिका को पूर्ण समर्पित।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (12)

(क) बाज़ार की जादुई ताक़त कैसे एक व्यक्ति को अपना गुलाम बना लेती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(ख) गगरी फूटी बैल पियासा' इंदर सेना के इस खेलगीत पर लेखक की टिप्पणी को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

(ग) मानचित्र पर लकीर खींच देने मात्र से ज़मीन और जनता बँट नहीं जाती है - नमक' कहानी के आलोक में उदाहरणों के माध्यम से इस कथन की पुष्टि कीजिए।

(घ) 'शिरीष के फूल' के लेखक ने संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है - स्पष्ट कीजिए।

(ङ) 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' के लेखक के मतानुसार 'दासता' के स्वरूप को अपने शब्दों में समझाइए।

उत्तर- (क) ● अपनी चकाचौंध, आकर्षक मोह द्वारा।

● व्यक्ति में वस्तुओं के प्रति चाह जगाकर।

● खरीदने की विकलता पैदा कर।

● असंतोष और तृष्णा जगा कर।

(ख) ● लाभ प्राप्त करने के लिए पात्रता का होना आवश्यक।

● देशवासी द्वारा कर्तव्य का निर्वाह नहीं करना।

● सरकारी प्रयासों के बाद भी समस्याओं का बना रहना।

● वर्षा जल का उचित संरक्षण न होने से सूखे की समस्या बनी रहना।

(ग) ● पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच सीमा-रेखा बना देने मात्र से लोगों की भावनाएँ, अपनत्व समाप्त नहीं होता।

● अपनी जन्मभूमि से अनुराग खत्म नहीं होता।

● सफिया द्वारा लाहौर का नाम सुनते ही सिख बीबी का पास आना।

● लाहौर की खूबसूरती, उम्दा खाना, कपड़े आदि की चर्चा।

(घ) ● शिरीष की अवधूत से तुलना।

● शिरीष गर्मी और सर्दी सहकर अविचल।

● जीवन में वही सफल होता है, जो अपना स्वभाव शिरीष की तरह बना लेता है।

● जीवन संघर्ष के लिए धैर्य और उत्साह का होना आवश्यक।

(ङ) ● जहाँ कार्य करने की स्वतंत्रता न हो।

● अपना व्यवसाय चुनने का अधिकार न हो।

● जहाँ दूसरों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्य पालन के लिए विवश होना पड़े।

● मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता न देना।

12. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (6)
(क) 'जूझ' कहानी के कथानायक के मन में कविताओं के प्रति रुचि किसने जगाई और कैसे?

(ख) मुअनजो-दड़ो में सबसे ऊँचे चबूतरे पर बने बौद्ध स्तूप के महत्व को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

(ग) ऐन के अपने पड़ोसी मिस्टर डसेल के बारे में क्या विचार थे? लिखिए।

उत्तर- (क) ● मराठी के अध्यापक ने।

● अपने अध्यापन शैली से।

● विभिन्न कवियों की कविताओं को सुनाकर।

(ख) ● भिक्षुओं के कमरे।

● नागर भारत का पहला लैंडस्केप।

● सबसे खास हिस्से पर बना। प्रसिद्ध इमारतें - प्रशासनिक इमारतें, सभा-भवन, यज्ञशाला आदि।

(ग) ● मिस्टर डसेल पुराने जमाने के अनुशासन मास्टर हैं।

● उबाऊ भाषण सुनकर तंग आना।

● वे अच्छे-खासे चुगलखोर हैं।

13. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (4)

(क) यशोधर बाबू के व्यक्तित्व को दिशा देने में किशनदा के योगदान पर प्रकाश डालिए।

(ख) यशोधर बाबू को अपने बेटों की खरीदी हुई हर नई चीज़ बेज़रूरत लगती है किन्तु वे अन्दर से प्रसन्न भी होते हैं-ऐसा क्यों? स्पष्ट कीजिए।

(ग) कैसे कहा जा सकता है कि मुअन-जो-दड़ो की सभ्यता में आडम्बर नहीं था? उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर- (क) ● किशन दा से यशोधर बाबू प्रभावित।

● किशन दा ने आश्रय दिया, नौकरी दिलवाई।

● उनको आदर्श मानकर अनुकरण किया।

(ख) ● यशोधर बाबू बच्चों की तरक्की से खुश होते हैं।

● वे सादा व सरल जीवन में विश्वास रखते थे।

● वे अनुभव करते कि वह खुशहाली भी कैसी जो परायापन पैदा करे।

● बच्चों द्वारा नई-नई वस्तुएँ लाने पर संतोष व गर्व का अनुभव।

(ग) ● राजतंत्र, धर्मतंत्र में ताकत का प्रदर्शन नहीं।

● भव्य राज प्रासाद व मंदिर का नहीं होना।

● साधन और व्यवस्थाओं में समृद्ध।

● संपन्नता का दिखावा नहीं।

● मूर्ति शिल्प, औज़ार, नरेश के सिर का मुकुट, नावें आदि का उदाहरण।

14. 'डायरी के पन्ने' के पाठ-परिचय में कहा गया है, "कई बार खास इलाक़ों के मनुष्यों, जाति और संस्कृति का नामोनिशान मिटा देता है युद्ध।" - इस कथन के आलोक में उन जीवन-मूल्यों और परिस्थितियों की चर्चा कीजिए जिन्हें द्वितीय विश्व युद्ध को फासीवादी ताक़तों ने तहस-नहस कर दिया था। (5)

उत्तर- ● मानवता।

● आपसी सद्भाव।

● नस्ल-भेद मुक्त जीवन।

● सहयोग और भाई चारा।

● नाज़ियों द्वारा यहूदियों पर अत्याचार।

● जातीय संघर्ष।

● मौत के साए तथा भय में यहूदियों का जीवन संघर्ष।

अथवा

'जूझ' कहानी के कथानायक को अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए भी संघर्ष करना पड़ा था। आज 'शिक्षा का अधिकार' कानून बन जाने से ऐसी स्थितियों से कैसे निपटा जा सकता है? जीवन-मूल्यों के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- ● शिक्षा प्राप्त करना हर बच्चे का अधिकार।

● माता-पिता पर आर्थिक बोझ न बढ़ना।

● नामांकन, पोशाक एवं भोजन की सुविधा।

● पारिवारिक सहयोग एवं प्रेम की भावना का विकास।

● अपने बचपन को जीने का अधिकार प्राप्त होना।

(विचारों की प्रासंगिकता पर मुक्त उत्तर संभव)